ग्रामीण विकास में महिला सरपंचो की भूमिका एक अध्ययनः

नरसिंहपुर जिले के संदर्भ में 2000 से 2021 तक

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

राजनीति विज्ञान में पीएच.डी. की उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशिका

JV'nडॉ. सपना गहलोत

शोधार्थी

JV'nज्योति जाटव

मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग

फैकल्टी ऑफ एजुकेशन एवं मेथडोलॉजी

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,

जयपुर (राजस्थान) भारत

2021

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	पृष्ठ भूमि	1 – 8
2.	उद्देश्य	9
3.	शोध परिकल्पना	10
4.	विषय एवं अध्ययन क्षेत्र ग्रामीण विकास में महिला सरपंचो की भूमिका एक अध्ययनः नरसिंहपुर जिले के संदर्भ में 2000 से 2021 तक	11 – 12
5.	अध्ययन की रूपरेखा	13 – 14
6.	साहित्य अवलोकन	15 – 17
7.	प्रस्तावित शोध पद्धति	18 – 19
8.	शोध प्रश्न	20
9.	संदर्भ ग्रन्थ सूची	21 – 22
10.	शोध ग्रन्थावली	23
11.	वेब लिंक्स	24

पृष्ठभूमि–

ग्रामीण विकास का इतिहास एवं परिचय

प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में पुरुष प्रधान व्यवस्था लागू है। हमारे देश में स्त्री को देवी लक्ष्मी ज्ञान शक्ति आदि उपनामों से संबोधित किया जाता है। पर दुख इस बात का है कि वैदिक युग के पश्चात भारतीय रूढ़ियों और परंपराओं धर्मशास्त्रों के रचयिताओं ने स्त्री के लिए सीमा निर्धारित की है। उसकी दुर्बलताओं पर एकाधिकार कर लिया और उसे अपनी दासी बनाकर एक भोग की वस्तु के जैसा जीवन पर्यन्त प्रयोग किया है। लेकिन कई ऐसे सामाजिक सुधार आंदोलन के नेताओं ने स्त्री सुधार या स्त्री उद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिसमें राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, केशवदास, गोविंद, राठौड़ और महात्मा गांधी प्रमुख थे। समाजिक विकेंद्रीकरण के लिए महिलाओं की भूमिका आवश्यक थी ग्रामीण विकास का आर्थिक सुधार और सामाजिकता में बड़ा बदलाव होना जरूरी है क्योंकि ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में लोगों की बढ़ी हुई भागीदारी योजनाओं का विकेंद्रीकरण भूमि सुधारों को बेहतर तरीके से लागू करना लोगों के जीवन को बेहतर बनाने का लक्ष्य होता है।

ग्रामीण विकास एक बहुआयामी गतिविधि है। यदि ग्रामीण विकास की वृद्ध अवधारणा को देखा जाए तो इसमें ग्रामीण लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार की बात अत्यंत महत्वपूर्ण है विशेष रूप से उन लोगों के जीवन में सुधार की बात है जो गरीब एवं कमजोर वर्गों से हैं ग्रामीण विकास के प्रमुख मुद्दे जिनमें सामाजिक तथा आर्थिक सुविधाओं के लिए आधारभूत ढांचा तैयार करने की जरूरत है। इसमें स्कूल, स्वास्थ्य केंद्र, मकान, सड़कें, संचार व आवागमन के साधन जल आपूर्ति बाजार व्यवस्थाएं।पोषाहार कृषि एवं उद्योग धंधे पशुपालन विद्युतीकरण आदि को लिया जा सकता है।

पंचायती राज्य संक्षेप में

भारत गांवों का देश है। गांवों के विकास के बिना भारत के विकास की कल्पना करना असंभव है। गांवों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए महात्मा गांधी जी ने कहा था कि गांव भारत की आत्मा और आधार है। यदि भारत का विकास करना है तो गांव का विकास करना होगा प्रत्येक गांव को आत्मनिर्भर बनाना होगा।

यद्यपि प्राचीन काल से ही गांवों में पंचायत प्रणाली थी, फिर भी कालांतर में ऐसे सामाजिक एवं राजनैतिक बदलाव आए कि उनका रूप बिगड़ता गया एवं व्यवस्था में जड़ता आ गई। आजादी के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 2 अक्टूबर 1959 को राजस्थान के नागौर में पंचायती राज व्यवस्था का शुभारंभ किया परंतु इसे सार्थक रूप में अपनाया नहीं जा सका।

जिससे कि वे आर्थिक विकासों और सामाजिक न्याय के लिए कार्यक्रम बना सके और क्रियान्वित कर सके इसके बाद भी राष्ट्रीय सरकारों ने समय–समय पर अनेक समितियों का गठन कर ग्रामीण पंचायतों का स्वरूप निर्धारित करने का प्रयत्न किया परंतु इच्छाशक्ति की कमी के कारण लंबे समय तक अधिक कुछ नहीं किया जा सका। अन्ततः1993 संसद द्वारा 73वां संविधान संशोधन पारित किया गया।

इसे 24 अप्रैल 1993 से लागू किया गया 73वें संविधान संशोधन के तहत अपना–अपना पंचायती राज अधिनियम बनाया पंचायतों को अधिकतर देने और उन्हें विकास कार्य सौंपने से ग्रामीण क्षेत्रों की काया पलटने की उम्मीद है। गांव के लोग अपनी जिम्मेदारियों के प्रति सजग बनकर स्वावलंबी बनेंगे।

मध्यप्रदेश में 73वें संविधान संशोधन (1992) को लागू करने के लिए 30 दिसंबर 1993को (मध्य प्रदेश) पंचायती राज अधिनियम 1993रखा गया। जिसे 25जनवरी 1994 को लागू किया गया। इस अधिनियम के अनुसार पंचायती राज व्यवस्था के तीन स्तर हैं सभी तीनों स्तरों का कार्यकाल 5वर्षों का होता है। जिनका विवरण निम्न प्रकार से दिया गया है। ग्राम पंचायत,

जनपद पंचायत, जिला पंचायत हमारे देश के संविधान में 73वें संविधान संशोधन स्थानीय शासन के लिए एक क्रांतिकारी कदम है। अब दूरदराज के गांवों में रहने वाले लोग भी उन योजनाओं के निर्माण निर्णय प्रक्रिया और उनके कार्यान्वयन में भाग लेते है। जो उनके जीवन को प्रभावित करती है। पंचायतें राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के कार्यान्वयन में एक प्रमुख एजेंट (अभिकर्ता) की भूमिका निभाती है। भारत में पंचायतों के निष्पक्ष चुनावों की संवैधानिक व्यवस्था है ग्राम सभा का एक महत्वपूर्ण निकाय है यह समन्वय की भावना से अच्छा कार्य करती है, पंचायती राज्य की संस्थाओं में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और महिलाओं को आरक्षण प्राप्त है।

ग्रामीण विकास में महिलाओं की भागीदारी एवं प्रतिनिधियों के संदर्भ

प्राचीन भारत में पंचायत शब्द को संस्कृत भाषा में ''पंचायतन'' से परिभाषित किया गया है जिसका अर्थ पांच व्यक्तियों का समूह होता है, एक पिक्चर के माध्यम से विवरण दिया गया है

भारत की पंचायती राज प्रणाली में गांव या छोटे कस्बे के स्तर पर ग्राम पंचायत या ग्रामसभा होता है, जो भारत के स्थानीय स्वशासन की प्रमुख अवयव है, सरपंच ग्राम सभा का सर्वोच्च चुना हुआ प्रतिनिधि होता है, प्राचीन काल से ही भारत वर्ष में सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक जीवन में पंचायत का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, सार्वजनिक जीवन का प्रत्येक पहलू इसी के द्वारा संचालित होता था। स्वतंत्रता के पश्चात स्त्री समाज में अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही है, उसी संघर्ष का परिणाम आज देखने को मिल रहा है, इसलिए आज भारत में हर गांव कस्बे–शहर से लेकर अच्छे परिणाम देखने को मिल रहे हैं आज की नारी छोटे छोटे पद से लेकर बड़े–बड़े पदों पर प्रतिष्ठित हैं।

''जब भी सब्र का बाण टूटे, तो सब पर भारी।

फूल जैसी कोमल नारी, कांटो जितनी कठोर नारी''।।

भारतीय संस्कृति में नारी की महत्ता से कौन परिचित नहीं है। भारतीय संस्कृति में भगवान शिव का नाम अर्द्धनारीश्वर बताया गया है। यह पौराणिक प्रतिपादन समग्र समाज में महिलाओं के परसों के साथ बराबरी की भागीदारी की मान्यता है।

भारत गांवों का देश माना जाता है। अतः भारत के विकास हेतु आवश्यक है कि गांव का भी विकास हो ग्रामीण विकास की परिधि में ग्रामों में शिक्षा संस्कृति कला कौशल चिकित्सा समुदायिक विकास कृषि सामाजिक सुधार उद्योग धंधों पशुपालन रोजगार का विकास, पेयजल, विद्युत की व्यवस्था का विस्तार आदि चीजें आती हैं और यह सब महिला एवं पुरुषों की सहभागिता से ही संभव हो पाएगा।

आज महिला कंधे से कंधा मिलाकर हर एक स्तर में कर कर रही हैं महिला प्रतिनिधियों का अर्थ है कि समस्त वर्गों एवं स्तरों से प्रजातांत्रिक तरीके से चुनी गई या नामांकित की गई है महिला जो ग्राम सभा, जनपद पंचायत, जिला पंचायत, नगर पालिका, नगर निगम, विधानसभा, लोकसभा, राज्यसभा, पंच, सरपंच, पार्षद या जिला पंचायत, विधायक सांसद आदि की हैसियत से कार्य करने हेतु अधिकृत हैं।

ग्रामीण विकास में महिला सरपंचों जनप्रतिनिधि के रूप सें चुने जाने से ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक वातावरण की भी उन्नति होती है।इसके अलावा महिलाओं के मनोबल में वृद्धि होती है, महिला शिक्षा, महिला स्वास्थ्य,महिला प्रतिष्ठा आदि में भी वृद्धि होगी। महिलाओं को सरपंच के रूप में चुने जाने से महिला में पर्दा प्रथा झिझक एवं घबराहट दूर होगी तथा सही निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है। इसलिए ग्रामीणों में महिला प्रतिनिधियों की बहुत आवश्यकता है अब यह पता करना है कि महिलाओं की सहभागिता अब तक कितनी सफल हो सकी है।

<u>नरसिंहपुर जिले का संक्षेप में विवरण (नरसिंहपुर विशेष)</u>

नरसिंहपुर जिला मध्य प्रदेश राज्य के लगभग मध्य भाग में स्थित है। मध्य प्रदेश राज्य की स्थिति भी देश के मध्य भाग में है। इसलिए तो मध्यप्रदेश अर्थात मध्य भाग का प्रदेश नाम पड़ा है।

नरसिंहपुर जिले की स्थिति इस समीकरण के अनुसार विशिष्ट मानी जाती है कि वह देश व राज्यों दोनों के मध्य भाग में स्थित है। नरसिंहपुर अपनी विशेष प्राकृतिक स्थिति के कारण भी ध्यान आकर्षित करता है इसकी उत्तरी सीमा पर विंध्याचल और दक्षिणी सीमा पर पूरी लंबाई में सतपुड़ा श्रृंखला फैली हुई है, उत्तरी भाग में नर्मदा नदी पूर्व से पश्चिम की ओर बहती जिसे गंगा नदी सदृश्य पवित्र माना जाता है।

नर्मदा के कछार के रूप में नरसिंहपुर जिले के अनेक प्राकृतिक उपहार मिले हैं, पूर्व में यह क्षेत्र अनेक राजवंशों के अधीन रहकर ऐतिहासिक वीरांगना दुर्गावती के शासनधीन रहा है। उस काल में अन्य नामों से उल्लेख मिलता है।18वीं शताब्दी में जाट सरदारों ने यहां भव्य मंदिर का निर्माण करवाया है और भगवान नरसिंह की मूर्ति प्रतिष्ठित करवाई है तब से यहां जिले का मुख्यालय बना है गडरिया खेड़ा नाम का यह ग्राम 'नरसिंहपुर' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

नरसिंहपुर का सम्पूर्ण विवरण एक ग्राफ के माध्यम से दर्शाया गया है।

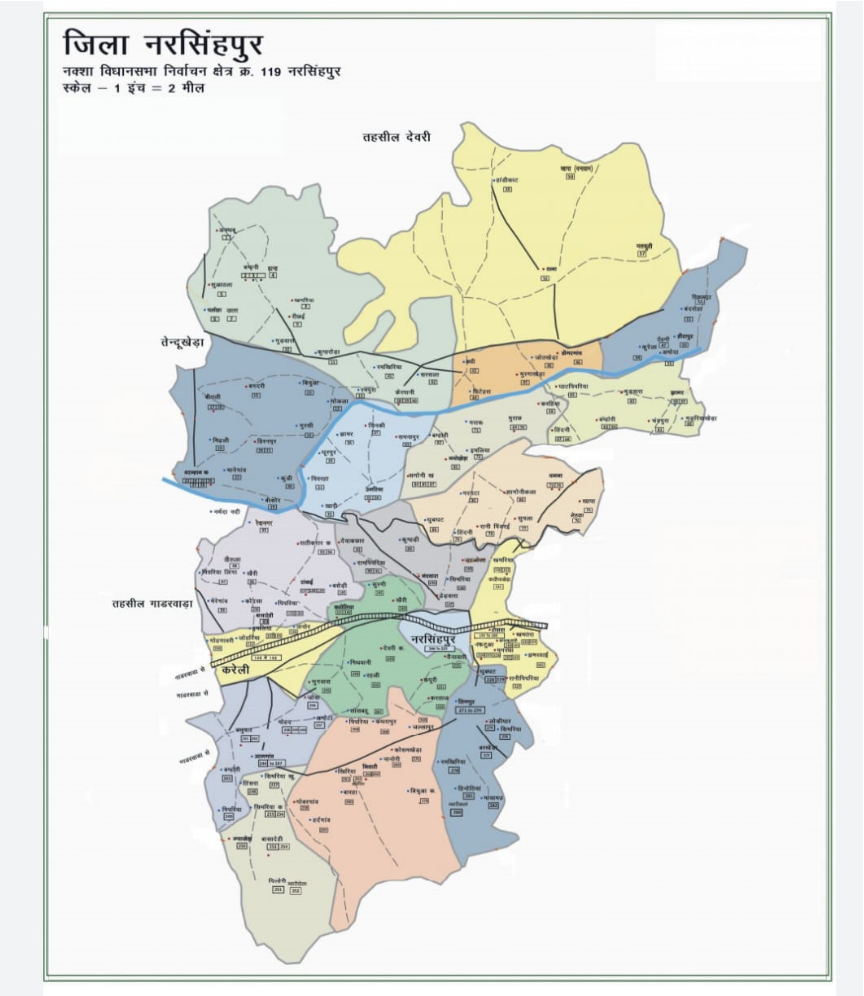

2021 की अनुमानित जनसंख्या

2020 में नरसिंहपुर की अनुमानित जनसंख्या	1,277,906
2021 में पुरुषों की अनुमानित जनसंख्या	665,735
2021 में महिलाओं की अनुमानित जनसंख्या	612,171

2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या

2011 में नरसिंहपुर की कुल आबादी	1,091,854
पुरुषों की जनसंख्या	568,810
महिलाओं की जनसंख्या	523,044
क्षेत्र (प्रति वर्ग कि.मी.)	5,133
घनत्व (प्रति वर्ग कि.मी.)	213
लिंग अनुपात	920
बच्चों का लिंग अनुपात 0-6 वर्ष	911
कुल साक्षर	718,785
साक्षर पुरुष	413,491
साक्षर महिलाएं	305,294
साक्षरता (प्र.)	75.69%
साक्षरता पुरुष (प्र.)	83.64%
साक्षरता महिलाएं (प्र.)	67.06%
बच्चों की जनसंख्या 0-6 वर्ष	142,250
लड़कों की जनसंख्या 0-6 वर्ष	74,445
लड़कियों की जनसंख्या 0-6 वर्ष	67,805
बच्चों की आबादी 0-6 वर्ष	13.03%

उद्देश्य–

- ग्रामीण विकास में महिला सरपंचों के योगदानों का विस्तृत अध्ययन करना
- 2000 से 2021 तक महिला सरपंच प्रतिनिधियों के आने के पश्चात् हुये विकास का अध्ययन करना
- पंचायती राज में निर्वाचित महिला जनप्रतिनिधियों को अपनी भूमिका निभाने में उनके समक्ष आने वाली समस्याओं एवं चुनौतियों का अध्ययन करना
- नरसिंहपुर जिले में विभिन्न वर्गों से निर्वाचित महिला सरपंचों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- महिला जन प्रतिनिधियों की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना

इस शोध के अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण विकास कार्यों में महिला सरपंच संबंधित विचारों को जानना और यह सिद्ध करना है कि महिला किन्हीं पुरुषों से कम नहीं है। हमारे देश की एकता अखंडता को बनाते हुए जन इच्छाओं एवं आकांक्षाओं पर खरा उतरना इस शोध कार्य का उद्देश्य है।

शोध परिकल्पना

अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएं तैयार की है–

- महिला जनप्रतिनिधियों में राजनैतिक सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति में अन्तर पाया जाता है
- महिला सरपंचों को अपने कार्यकाल के दौरान किन समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता होगा
- नरसिंहपुर जिले में विभिन्न वर्गों (जनरल, ओ.बी.सी., एस.सी., एस.टी.) की महिला सरपंचों का प्रतिनिधित्व होता है।

विषय–

ग्रामीणों में महिला सरपंचों के अधिकार कर्तव्यों का विश्लेषण एवं वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

अध्ययन क्षेत्र :–

ग्रामीण विकास एक बहुआयामी गतिविधि है ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाना और उनके विकास के क्रम को आत्मपोषित बनाना ही ग्रामीण विकास का प्रमुख लक्ष्य होता है। यह एक ऐसी व्यूह रचना है जो लोगों के लिए विशिष्ट समूह के आर्थिक व सामाजिक जीवन को उन्नत बनाने के लिए आवश्यक है। 73वें संविधान संशोधन में महिलाओं को एक तिहाई आरक्षण का प्रावधान किया है। वर्ष 1995 व 2000 में पंचायती आम चुनावों में इन प्रावधानों को लागू किया गया। इन चुनावों को पंचायती राज में महिला नेतृत्व का प्रारंभिक चरण माना जाना चाहिए। नेतृत्व क्षमता में परिवर्तन क्रमशः होने की संभावना है।

इस दिशा में गति परिलक्षित होने लगी है। पंचायती राज्य में महिलाओं की सहभागिता को इंगित करना ही इस शोध का लक्ष्य है। बलवंत राय मेहता समिति ने महिलाओं बच्चों के कार्यक्रमों को देखने के लिए जिला परिषदों में दो महिलाओं की अनुशंसा की थी कि ऐसी पंचायत बनाई जाए जिनमें केवल महिला प्रतिनिधि हों।

''भारतमें महिलाओं का स्थान विषय पर गठित समिति ने 1974 में अनुशंसा की थी कि ऐसी पंचायतें हैं जहां महिलाओं की सहभागिता ज्यादा हो हर गांव हर क्षेत्र में महिला कदम से कदम मिलाकर कार्य करें क्योंकि गांव के विकास की नींव ज्यादातर महिलाओं पर ही निर्भर होती है। क्योंकि महिला अपने कर्तव्य को सही ढंग से निभाने की कोशिश करती है''।

1970 में अशोक मेहता समिति ने दो महिलाओं को जिन्हें सर्वाधिक मत मिले हो उनकी अनुशंसा की।''नेशनल प्रैक्टिस प्लान फॉर द वूमेन''1988में ग्राम पंचायत से लेकर जिला परिषद तक 30 प्रतिशतसीटों के आरक्षण की अनुशंसा की थी। (पृष्ठ 66)

महिला सरपंचों का दायित्व

सरपंच पंचायत का मुखिया होता है पंचायत के कार्य एवं शक्तियों का पालन करना सरपंच में निहित होता है। सरपंच पंचायत में वार्ड, पंचों ग्राम सभा, सदस्यों एवं समस्त कर्मचारियों के सहयोग से विकास के लिए जिम्मेदार होता है, ग्राम पंचायत की सफलता के लिए आवश्यक है कि उसके विभिन्न अंग ठीक से काम करें ये अंग हैं स्वयं वोटर जो ग्राम सभा के सदस्य के रूप में सक्रिय होते हैं। निगरानी समितियों जिनका गठन ग्राम सभा में होता है। ग्राम पंचायत सदस्य जो प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उप मुखिया, मुखिया एवं स्थाई समिति जिनका गठन ग्राम पंचायत करता है इस सबकी अपनी–अपनी भूमिकाएं हैं जिसमें थोड़ी सी भी कमी आने पर ग्राम पंचायतों के पूरे काम पर असर पड़ता है।

अध्ययन की रूपरेखा–

1. नरसिंहपुर जिले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक अध्ययन
2. महिला सरपंचों का जीवन परिचय एवं उद्देश्य
3. ग्राम पंचायतों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं महिला जागरूकता के संदर्भ में
4. महिला सरपंचों का साक्षात्कार द्वारा प्राप्त उत्तरों का सारणीयन एवं विश्लेषण
5. निष्कर्ष/उपसंहार

1. **प्रथम अध्याय :– नरसिंहपुर जिले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक अध्ययन**

   प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत नरसिंहपुर की प्रशासनिक व्यवस्था प्रशासनिक विभाग के उनके पदाधिकारी पर्यटक स्थल, कृषि पंचायती राज्य व्यवस्था का अध्ययन किया जाएगा एवं नरसिंहपुर जिले की तहसीलों, विकास खंडों का अध्ययन किया जाएगा।

2. **द्वितीय अध्याय :– महिला सरपंचों का ऐतिहासिक परिचय**

   महिला सरपंचों का ऐतिहासिक परिचय– प्रस्तुत अध्याय में महिला सरपंचों का जीवन परिचय एवं उद्देश्य, परिकल्पना, अध्ययन की पद्धति एवं अध्ययन के स्त्रोतों का विवेचन किया जाता है।

3. **तृतीय अध्याय :– ग्राम पंचायतों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं महिला जागरूकता के संदर्भ में**

   भारतीय ग्रामीण जीवन के पुनर्निर्माण में पंचायतों का योगदान, पंचायती राज से संबंधित 73वां संविधान संशोधन पूर्व एवं पश्चात, 2000 से 2020 तक महिला सशक्तिकरण एवं महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति का विस्तृत वर्णन किया जायेगा। महिलाओं के कानूनी अधिकारों एवं घरेलू हिंसा की शिकार महिलाओं को जागरूकता लाना विस्तृत वर्णन किया गया।

4. **चतुर्थ अध्याय :– महिला सरपंचों का साक्षात्कार द्वारा प्राप्त उत्तरों का सारणीयन एवं विश्लेषण**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत ग्रामीण में महिला वार्ड सहायक गांव की स्वच्छता शिक्षा, स्वास्थ्य, विद्युतसुविधा, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का अध्ययन किया गया। ग्रामीण विकास में महिला सरपंचों की चुनाव प्रक्रिया वोट मत की गणना एवं नरसिंहपुर जिले का एक गांव ऐसा भी जहां कभी पंचायत चुनाव नहीं हुआ विशेष संदर्भ में प्रस्तुत किया गया।

5. **पंचम अध्याय :– निष्कर्ष/उपसंहार**

प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए वर्तमान समय में महिला सरपंचों की उपयोगिता एवं प्रसंगिकता।

साहित्य अवलोकन

1. **राधा कुमार (1800–1990 में)– स्त्री के संघर्ष का इतिहास**–स्वतंत्रता के पश्चात महिलाओं की स्थिति दशा दासता का उल्लेख किया गया। प्रस्तुत पुस्तक में महिला के संघर्ष का विस्तृत रूप से विवेचन किया गया है।
2. **सोनू लाल मीना (2014)**– पंचायती राज्य में महिला नेतृत्व पंचायती राज्य की अवधारणा महिला सरपंच का विश्लेषण पंचायती राज में महिला नेतृत्व एवं दायित्व अधिकारों का उल्लेख किया गया है। भारतीय समाज में महिलाओं की दशा महिला विकास के कार्यक्रमों महिला प्रतिनिधियों की समस्याओं का वर्णन किया गया है।
3. **आलोक कुमार (2012)**– ग्रामीण समाज इस पुस्तक में भारत में ग्रामीण समाज का अध्ययन किया गया है, महिलाओं की ग्रामीण समाज में वर्तमान स्थिति ग्रामीण बेरोजगारी, ग्रामीण परिवारों की व्यवस्था का विस्तृत वर्णन किया गया है।
4. **कोठार सिंह (2011)**– ग्रामीण विकास सिद्धांत नीतियों एवं प्रबंधन इस पुस्तक में ग्रामीण विकास क्यों? ग्रामीण विकास की नीतियां वर्तमान गरीबी परिदृश्य और प्रकृतियां ग्रामीण रोजगार परिदृश्य पंचायती राज संस्थाओं का उल्लेख किया गया है।
5. **बी.एल. गुप्ता आर.बी. शिव गुण्डे (2005) गांव विकास परियोजना के लाभ**–इस पुस्तक में गांवों का संपूर्ण विवरण एवं सर्वांगीण विकास गांव स्तर पर विस्तृत योजना बनाना गांव विकास हेतु शिक्षण शोध एवं प्रशिक्षण संस्थाओं की भूमिका का उल्लेख है।
6. **प्रमोद कुमार अग्रवाल (2021)**– का भारत में पंचायती राज्य, मध्य प्रदेश में पंचायती राज एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था भारत में पंचायती राज्य का ऐतिहासिक विकास प्रमुख समितियां जिला योजना समिति मध्य प्रदेश त्रिस्तरीय पंचायती राज आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है।
7. **प्रताप मल देवपुरा(2019)**– ग्रामीण विकास का आधार आत्मनिर्भर पंचायतेंप्रस्तुत पुस्तक में ग्रामीण विकास का आधार एवं आत्मनिर्भर भारत, आत्मनिर्भर पंचायतों की व्यवस्थाओं का विस्तृत वर्णन किय है।

8. **डॉ. प्रियंका कपूर (2017) भारतीय समाज**–पंचायते जाति पंचायत का अर्थ जाति पंचायत की संरचना जाति पंचायत की दण्ड व्यवस्था ग्राम पंचायत अंग्रेजी शासन में पंचायते भारत में पंचायतों का पुर्नगठन ग्रामीण भारत में पंचायती राज का प्रभाव पंचायतों का योगदान ग्राम पंचायत एवं जाति पंचायत में अन्तर पंचायत से संबंधित 73वें संविधान संशोधन पंचायती राज 73वें संविधान संशोधन पूर्व एवं पश्चात् भारत में पंचायती राज का मूल्यांकन पंचायतों की प्रभावशाली बनाने के लिए सुझाव दिये गये हैं।
9. **एम. ए. हम्पी (2014) स्त्री शिक्षा**–शिक्षा का अर्थ महत्व शिक्षा प्राप्ति हेतु अवसर भारत में महिलाओं की स्थिति महिला उत्पीड़न **स्त्री शिक्षा** विकास की सम्भावनायें, शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के उपकरण का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया।
10. **डॉ. रविन्द्रनाथ मुखर्जी, डॉ. भरत अग्रवाल (2018) निर्बल वर्गों का समाजशास्त्र** –भारत में स्त्रियों की स्थिति एवं समस्याएं, नारी वाद आन्दोलन एवं उत्थान के शासकीय प्रयास, निर्बल वर्ग अवधारण इतिहास, जनसंख्या, संरचना विशेषताएं एवं प्रकार अनुसूचित जातियांः समस्याएं सुधारवादी आन्दोलन आदि का विस्तार से वर्णन किया गया।
11. **तेज तरूण सिंह (2013) समाज शिक्षा** –समाज शिक्षा का स्वरूप उद्‌देश्य एवं आवश्यकता समाज शिक्षा का इतिहास, समाज शिक्षा प्रशासन, संगठन, समाज शिक्षा विदेशों में समाज शिक्षा की समस्याऐं का उल्लेख इस पुस्तक में किया गया है।
12. **डॉ. के.सी. अग्रवाल (2018) स्वयं को समझना** –इसमें व्यक्तिगत दृष्टिकोण जीवन का ध्येय एवं जीवन को एक आकांक्षाएं तथा चेतना पूर्ण दिशा प्रदान करना। स्वयं एवं समाज की ओर मूल्यों को परिभाषित करना, स्वयं में शान्ति की स्थापना करना, प्रस्तुत पुस्तक में उल्लेख किया गया है।
13. **रमा शर्मा, एम. के. शर्मा (2009) महिला विश्वकोश** –वर्तमान परिदृश्य में नारी का स्वरूप समस्याओं से समाधान तक महिला का वर्तमान स्वरूप, महिलाओं के कानूनी

14. अधिकार, निम्न वर्गीय महिलाओं को आवासीय स्तर पर सर्वेक्षण महिला जीवन के विविध रंग का विस्तृत वर्णन किया गया है।

15. **दीप्ति जैन (2017) लिंग, विद्यालय एवं समाज** –लिंग अध्ययन समानताऐं विषमताऐं महिलाओं की छवि भूमिका उत्तरदायित्व एवं अधिकार रूढिवादिता समाजीकरण एवं परिवार का इस पुस्तक में विवरण दिया गया है।

16. **पायल भोला जैन (2014–15) स्वयं की पहचान** –स्वयं के द्वारा किये गये कार्य की जिम्मेदारी लेना, समाज व विश्व को समझने में स्वयं के विचार संवेगों पर अन्तः चिन्तन करना। स्वतंत्रता और अनुशासन का वर्णन किया गया है।

प्रस्तावित शोध पद्धति

प्रस्तावित शोध पद्धति में ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा। ऐतिहासिक शोध विधि द्वारा अतीत के विचारों के आधार पर वर्तमान में प्रासंगिकता ज्ञात करना इस विधि के ग्रंथलयों से विचारों की विगत घटनाआं एवं प्रकृतियों के आधार पर वर्तमान परिदृश्य को समझा जा सकेगा। विश्लेषणात्मक विधि द्वारा पहले से उपलब्ध तथ्यों या जानकारी का उपयोग किया जाएगा और इस सामग्री का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिए उसका विश्लेषण किया जाएगा। तुलनात्मक शोध विधि के अंतर्गत किन्हीं मानदंडों के आधार पर दो या दो से अधिक परिस्थिति अथवा तथ्यों की तुलनाकी जा सकेगी।शोध हेतु अनेकों प्रकार की सामग्री के संकलन हेतु प्राथमिक सामग्री व द्वितीयक सामग्री का प्रयोग किया जाएग।I इस शोध कार्य में ग्रामीण विकास में महिला सरपंचों की भूमिका संबंधित विचारों का विश्लेषण हेतु द्वितीयक सामग्री का प्रयोग किया जाएगा जो निम्नलिखित है–

- पुस्तकालय में उपलब्ध सभी सूचनाऐं
- पुस्तकें
- लेख पत्र–पत्रिकाऐं
- पांडुलिपि
- पूर्व में हुए शोध अध्ययन

महिला प्रतिनिधियों के विचारों की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता हेतु प्राथमिक सामग्री का प्रयोग किया जाएगा। प्राथमिक सामग्री को एकत्रित करने के लिए निम्नलिखित प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा।

1. साक्षात्कार
2. अनुसूची
3. प्रश्नावली

वर्तमान काल के विद्वानों द्वारा लिखित सहायक ग्रंथों से सामग्री प्राप्त की जा सकेगी। अनेक पत्र–पत्रिकाओं इंटरनेट जनरल सोध ग्रंथों आदि की सहायता ली जाएगी। इस अध्ययन में ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं विकासात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया जाएगा। इस शोध के दौरान सार्थक पुस्तकों और लेखक दस्तावेजों और अन्य स्रोतों की सहायता ली जाएगी जिसमें अध्ययन में समग्रता होगी।

शोध प्रश्न

- ग्रामीण विकास से जुड़े मुख्य प्रश्नों की समस्या कैसी थी?
- ग्रामीण विकास में महिला सरपंच के अधिकार एवं दायित्व को कैसे निभाया?
- ग्रामीण विकास कार्यक्रमों का लाभ वास्तव में जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचाने में सफल रहे हैं?
- नरसिंहपुर जिले में कितने गांव, तहसील, विकासखंड, ग्राम पंचायत रही?
- पंचायती राज व्यवस्था में कौन सा संविधान संशोधक शामिल किया गया?

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. सिंह,कुठार, ग्रामीण विकास सिद्धांत, नीतियां पृ.सं. 222
2. वही पृ.सं. 226, 243, 254
3. गुप्ता, बी एल, ग्राम विकास परियोजना प्रबंधन, पृ.सं. 3, 5
4. शिव गुंडे, आरबी, ग्राम विकास परियोजना प्रबंधन, पृ.सं. 19, 129
5. वही पृ.सं. 246, 254
6. कुमार, आलोक, ग्रामीण समाजशास्त्र, पृ.सं. 1, 78, 84, 184
7. जैन, सुशीला,''ग्रामीण विकास एक अध्ययन'' प्रकाशन आगरा, 1960 पृ.सं. 31, 71
8. पीएफ श्रीवास्तव जिला गजेटियर, प्रकाशक जिला नरसिंहपुरपृ.सं. 202
9. वहीपृ.सं. 39, 67
10. विजयदत्त, मध्यप्रदेश में प्रकाशित पत्रकारिता का अभाव, प्रकाशन मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल 2003
11. प्रकाश, राज,''ग्राम संस्कृति'' प्रकाशन मुंबई स्पेयर पार्ट प्राइवेट लिमिटेड लालबाग मुंबई– 2005 पृ.सं. 495, 96
12. जिला ग्रामीण विकास अभिकरण नरसिंहपुर द्वारा उपलब्ध।
13. जिला कलेक्ट्रेट नरसिंहपुर निर्वाचन आयोग द्वारा सर्वेक्षण।
14. मध्यप्रदेश के संदर्भ में 2010 प्रकाशन सहित भवन पब्लिकेशन पृ. 223
15. समन्वित ग्रामीण विकास नियम पुस्तिका 1994 पृ.सं. 7, 09, 92
16. पंवार मीनाक्षी, पंचायती राज्य एवं ग्रामीण विकास योजनाऐं हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पृष्ठ 5
17. पवांर मीनाक्षी पंचायती राज्य और ग्रामीण विकास, क्लासीकल, पब्लिसिंग कम्पनी पृ. 2, 4, 6, 26
18. माहेश्वरी एस. आर. भारत में स्थानीय शासक, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा 2003 पृ. 23

19. आई.ए.एस. निर्मला, इन्द्रिरा गांधी पंचायती राज्य एवं ग्रामीण विकास संस्थान (जयपुर) पृ.सं. 22
20. वार्षिक रिपोर्ट 2016–17 महिला एवं बालविकास मंत्रालय पृ.सं. 07
21. एच.एस. ढिल्लन, लीडर शिप एण्ड ग्रप्स इन साउथ इण्डिया विलेजस, प्रोग्राम ईवेल्युएशन आर्गेनाइजेशन, प्लानिंग कमिशन, नई दिल्ली, 1995
22. ऑस्कर लेविस, ग्रुप डायनामिक्स इन नार्थ इंडिया विलेजस, ए स्टडी ऑफ फ्रेक्शन, प्लानिंग कमीशन, नई दिल्ली, 1958
23. अवतार सिंह लीडर शिप पैटर्न एण्ड विपेज स्ट्रक्चर, स्टलिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1963
24. बी.एस. भार्गव, पंचायत राज सिस्टम एण्ड पॉलिटिकल पार्टीज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1979
25. डी. एस.चौधरी, इमर्जिंग रूरल लीडरशिप इन इण्डियन स्टेटस, मंथन पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1981
26. कुरूक्षेत्र (1964) पंचायती राज और महिला विकास, पाइंटर पब्लिशर्स, जयपुर
27. शर्मा हरिश्चन्द्र (1968) भारत में स्थानीय प्रशासन, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
28. प्रसाद ईश्वरी (1965) भारत का इतिहास – 1 इंडियन प्रेस, इलाहाबाद
29. त्रिपाठी आा.पी. (1956) राइज एण्ड फॉल ऑफ मुगल एम्पायर, सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद।

<u>शोध ग्रन्थावली –</u>

1. पंचायती राज और महिला सशक्तिकरण – सीमा सिंह
2. भारतीय महिला, तेजी से बढ़ते कदम – प्रीति
3. भारत में महिला सशक्तिकरण – डॉ. खरे
4. शिक्षा में छिपा है महिला सशक्तिकरण का रहस्य – अरूण यादव
5. आज की दुर्गा महिला सशक्तिकरण – शोरा भीजी
6. नारी – विमला मैथिल
7. नारी सशक्तिकरण की समर्थक – सुरेश चन्द्र गुप्ता
8. नारी शक्ति को वन्दन – नरेन्द्र मोदी

वेब लिंक्स –

1. https://narsinghpur.nic.in
2. https://ni.m.wikipedia.org>wiki
3. https://hindi.mapsafindia.com>nars
4. https://books.google.co.in./book.in
5. www.drishtiias.com
6. https://kisansahavata.com
7. www.in.mygov.in
8. https://www.36kaakda.in>2021-/08
9. https://hi.m.wikipedia.org>wiki>
10. https://www.drishtiias.com>hindi
11. https://www.pravakta.com>women..
12. www.amarujala.com
13. https://andjournalin.files.wordpress.com
14. https://nindpr.org.in>jrd>hindi
15. https://Shodhgangotri.infibnet.ac.in
16. https://in.m.wikipedia.org>wiki>